Home Assignment 2

Class: 9th

Subject: Hindi

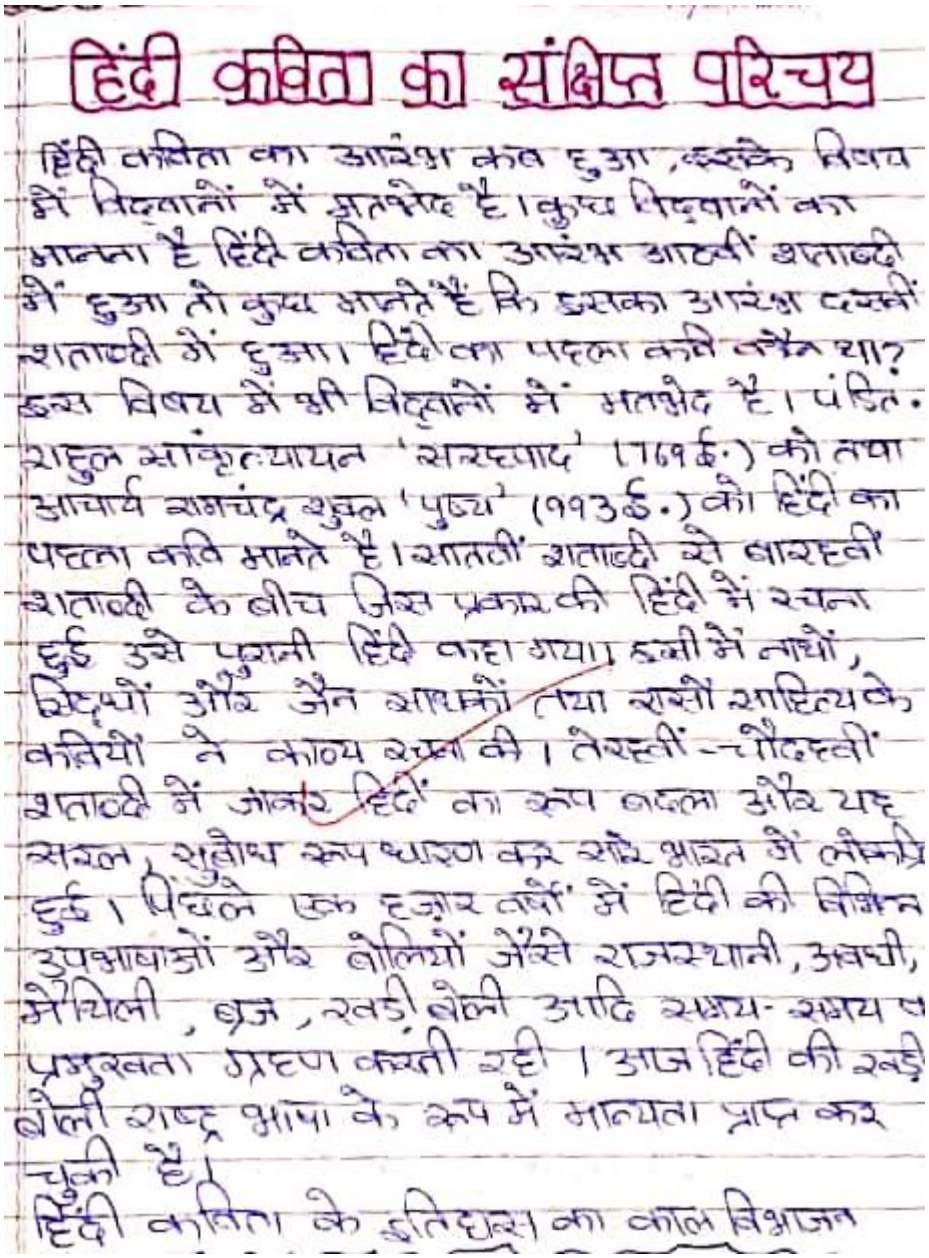

हिंदी कविता का संक्षिप्त परिचय

हिंदी कविता का आरंभ कब हुआ, इसके विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का मानना है हिंदी कविता का आरंभ आठवीं शताब्दी में हुआ तो कुछ मानते हैं कि इसका आरंभ दसवीं शताब्दी में हुआ। हिंदी का पहला कवि कौन था? इस विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। पंडित राहुल सांकृत्यायन 'सरहपाद' (769 ई.) को तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'पुष्य' (993 ई.) को हिंदी का पहला कवि मानते हैं। सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के बीच जिस प्रकार की हिंदी में रचना हुई उसे पुरानी हिंदी कहा गया। इसी में नाथों, सिद्धों और जैन साधकों तथा रासो साहित्य के कवियों ने काव्य रचना की। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में जाकर हिंदी का रूप बदला और यह सरल, सुबोध रूप धारण कर सके भारत में लोकप्रिय हुई। पिछले एक हज़ार वर्षों में हिंदी की विभिन्न उपभाषाओं और बोलियों जैसे राजस्थानी, अवधी, मैथिली, ब्रज, खड़ी बोली आदि समय-समय पर प्रमुखता ग्रहण करती रही। आज हिंदी की खड़ी बोली राष्ट्र भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी है।

हिंदी कविता के इतिहास का काल विभाजन

पिछले लगभग सौ वर्षों के, कबीर की हिन्दी साहित्य को हम चार कालों में बाँट सकते हैं :-

1. आदिकाल :- सन् 800 से 1400 ई. तक।

2. भक्तिकाल :- सन् 1400 से 1600 ई. तक।

3. रीतिकाल :- सन् 1600 से 1800 ई. तक।

4. आधुनिक काल :- सन् 1800 से आज तक।

1. आदिकाल :- आदिकाल के दौरान देश विदेशी आक्रमण कारियों से जूझता रहा। इस काल के कवि राज-दरबारों में रहकर अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में कविता लिखते रहे। इसी काल में बौद्ध धर्म की महायानी शाखा और हिंदू धर्म के शाक्त संप्रदाय का समन्वय शुरू हुआ।
इसी के फलस्वरूप सरहपा, मछंदरपा, आदि सिद्धों तथा गोरखनाथ जैसे नाथों ने काव्य रचना की। इसी काल में देवसेन शालि प्रद्युम्न आदि जैन साधकों ने धार्मिक काव्य की रचना की। इसी काल में अमीर खुसरो जैसे मुसलमान कवियों ने खड़ी बोली में कविता रची। खुसरो

की पद्धतियाँ और युक्तियाँ विशेष विकसित हुईं। इसी काल में मैथिल कोकिल कहे जाने वाले कवि विद्यापति ने भी श्री राधा-कृष्ण के लौकिक प्रेम को अपनी कविता में चित्रित किया। कुल मिलाकर आदिकाल में धार्मिक, अर्धधार्मिक, वीर रस युक्त तथा लौकिक विषयों पर महाकाव्य लिखे। दोहा तथा मुक्तक काव्य शैली में भी काव्य की रचना हुई।

(ii) **भक्तिकाल** :- इस काल में दो प्रकार की भक्ति की कविता रची गई — निर्गुण और सगुण। निर्गुण भक्ति की दो शाखाएं थीं :- ज्ञान मार्गी और प्रेम मार्गी। ज्ञान मार्गी भक्ति की कविता लिखने वालों में प्रमुख थे :- कबीर, गुरु नानक जी, रविदास, मलूक दास आदि। प्रेम मार्गी भक्ति की कविता रचना वालों में प्रमुख थे — कुतबन, सूफी संत मलिक मोहम्मद जायसी, मंझन। निर्गुण भक्ति के कवि पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा गुरु द्वारा दिए ज्ञान को महत्व देते थे। ये कवि ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना के पक्ष में थे। इन कवियों ने अपनी कविता द्वारा हिंदू-मुसलमान एकता स्थापित करने की कोशिश की।

सगुण भक्ति की कविता की भी दो शाखाएं हुईं :- कृष्ण भक्ति और

राम भक्ति भावना। कृष्ण भक्ति भावना के प्रमुख कवि सूरदास, नंददास, मीरा, रसखान आदि। रामभक्ति भावना के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास हुए। सगुण भक्ति के कवि ईश्वर के सगुण रूप की उपासना के पक्ष में है।

ज्ञान मार्गी
संत कवियों ने भोजपुरी, ब्रज, और खड़ी बोली के मिश्रित रूप में कविता लिखी, जबकि प्रेम मार्गी सूफी संतो ने अवधी भाषा में कविता लिखी। कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रज भाषा में तथा राम भक्त कवियों ने अवधी और ब्रज दोनों ही भाषाओं में कविता लिखी।